स्वामी विवेकानंद विद्या निकेतन, कोटा में श्रीरामशांताय सभागार के उद्घाटन के अवसर पर भाषण

---

1 मार्च, 2020

स्वामी विवेकानंद विद्या निकेतन, कोटा

स्वामी विवेकानंद विद्या निकेतन स्कूल में नवनिर्मित श्री रामशांताय सभागार के उद्घाटन समारोह में आप सबके बीच आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। सबसे पहले मैं यह नया सभागार बनाने के लिए आपको हार्दिक बधाई देता हूं। अपने निगमित सामाजिक दायित्व के अंतर्गत इस सभागार को स्वीकृति देने और इसका निर्माण करने के लिए मैं गोयल ग्रुप ऑफ कंपनीज की भी हृदय से सराहना करता हूं।

इस सभागार का नाम श्री राम शान्ताय स्वयं में भारत की संस्कृति की ख़ूबसूरती को बयान करता है। हम श्री राम के उपासक और शांती के पुजारी हैं। मुझे विश्वास है कि यहाँ होने वाले सभी कार्यक्रम बच्चों में हमारी संस्कृति की जड़ों को और गहरा करेंगे।

यह बहुत खुशी की बात है कि विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, वर्ष 1952 में गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में अपने पहले सरस्वती शिशु मंदिर की स्थापना से लेकर, अब तक कई दशकों से शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र में निरंतर कार्य कर रहा है। वर्ष 1977 में राष्ट्रीय निकाय के गठन से यह संस्था और भी मजबूत हुई है और वर्तमान में विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान इन संस्थानों में शिक्षा प्राप्त कर रहे लगभग 34 लाख विद्यार्थियों के साथ 1300 से भी अधिक विद्यालयों का संचालन कर रहा है।

इस संगठन की शुरुआत शिक्षा की ऐसी राष्ट्रीय व्यवस्था प्रदान करने के लिए की गई थी जिससे युवा पुरुषों और महिलाओं की ऐसी पीढ़ी तैयार की जा सके जो मातृ-भूमि और हमारे समृद्ध सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति सम्मान की भावना से परिपूर्ण हो। यह संस्था उपयुक्त नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व के विकास पर विशेष बल देती है।

मुझे यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई है कि यह संस्था शैक्षिक पाठ्यक्रम के मुख्य विषयों के साथ योग, शारीरिक शिक्षा, नैतिक मूल्य और अध्यात्म की शिक्षा भी दे रही है।

हम सब जानते है कि स्वामी विवेकानंद, जिनके नाम से इन संस्थाओं का नाम है, भारत के एक महान सपूत थे। उन्होंने पराधीन भारत की युवा शक्ति बन शिकागो धर्म सम्मलेन में विश्व बन्धुत्व और विश्व मानवता का उद्घोष किया और वेदों की वाणी के शंखनाद से मन्त्र मुग्ध कर दिया था। आज हमारी पीढ़ी का एक बड़ा हिस्सा जब पाश्चात्य संस्कृति की ओर आकर्षित होता और अपने संस्कारों से दूर भागता नज़र आता है, वहां स्वामी जी के मार्ग को याद कर उन्हें राह दिखाने की आवश्यकता है।

मित्रो, शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण होती है। हमारी युवा पीढ़ी इसी माध्यम से विभिन्न विषयों और विधाओं में ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ हमारे नैतिक मूल्यों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को जान पाएगी। हमारे बच्चों को हमारी सांस्कृतिक विशेषताओं के बारे में पूरी जानकारी देना और यह सुनिश्चित करना कि हमारे बच्चे हमारी संस्कृति की ताकत से परिचित हों और उससे सीख कर आगे बढ़ें, यह हमारी पीढ़ी की ही जिम्मेदारी है।

विद्या भारती इस मामले में एक अग्रणी संस्था रही है और इसने बच्चों को भारत के सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों को महत्व देने वाला परिवेश उपलब्ध कराया है। वास्तव में, इनका शैक्षिक पाठ्यक्रम इन सभी बातों को ध्यान में रखकर और सभी कक्षाओं के लिए मूल्य आधारित शिक्षा का समावेश करके तैयार किया गया है। इसी प्रकार की नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा के माध्यम से ही बालकों में वांछित चारित्रिक विशेषताएँ विकसित की जा सकती हैं।

चूंकि, योग हमारी प्राचीन परंपरा का एक बहुमूल्य वरदान है, इसलिए यह उचित ही है कि विद्या भारती ने अपने पाँच बुनियादी शैक्षिक विषयों में योग को भी शामिल किया है। हमें इस पीढ़ी को जो आज विद्यार्थी हैं उन्हें कर्मठ और निर्भीक बनाना है, उन्हें जुझारू और संवेदनशील बनाना है।

आजकल ऐसा पाया जाता है कि विद्यार्थियों पर बस्ते का बडा भारी बोझ रहता है। बडे पाठ्यक्रम होते हैं, पाठ्यपुस्तकों का ढेर होता है। कम उम्र से ही होमवर्क और क्लास वर्क का बडा दबाव होता है। ऐसे में पढ़ाई बोझ-सी लगने लगती है। बच्चों की दिलचस्पी जाती रहती है। वे तनाव में आ जाते हैं। हमें शिक्षा को व्यावहारिक बनाना होगा, विद्यार्थियों में जिज्ञासा और उत्सुकता जगानी होगी ताकि वे स्वयं पूछें, वे स्वयं हल ढूंढने को आतुर हों। अध्ययन में तनाव नहीं, बल्कि आनन्द होना चाहिए। शिक्षा में दबाव नहीं, बल्कि सहजता होनी चाहिए। उनके पास सूचनाओं का भंडार नहीं, बल्कि ज्ञान की पूंजी होनी चाहिए। जब वे शिक्षा पूरी करके स्कूलों से बाहर निकलें, तो वे सिर्फ एक सक्षम और सफल व्यक्ति ही नहीं, बल्कि एक जिम्मेदार नागरिक बनकर निकलें और उससे भी बढकर एक बेहतर इंसान बनकर निकलें।

दरअसल हमने अपनी शिक्षा प्रणाली को प्रयोगशाला में बदल दिया है, जहां से सफलता का उत्पादन हो। मेरा ऐसा मानना है कि यदि हम अपने शिक्षा तंत्र से एक ऐसा नागरिक तैयार कर पाएं जो सफलता में मदांध न हो, विफलता से हताश न हो, तो यही हमारी सबसे बड़ी सफलता होगी।

हमारी शिक्षा प्रणाली से ऐसी चरित्रवान युवा पीढ़ी तैयार होनी चाहिए, जो देश की सेवा और विकास के प्रति समर्पित हो । तभी, शिक्षा राष्ट्रीय प्रगति और देश में 'अनेकता में एकता' की भावना को बढ़ावा देते हुए लोकतन्त्र को और मजबूत बनाने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सफल होगी। हमारे विद्यालयों में भी प्राकृतिक वातावरण साफ-सुथरा होना चाहिए। विद्यार्थीगण स्वच्छता और पर्यावरण के प्रति जागरूक बनें। क्योंकि स्वच्छ वातावरण में व्यक्ति स्वस्थ रहता है और स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन और मस्तिष्क का निवास होता है।

मुझे ये कहते हुए गर्व हो रहा है कि स्वामी विवेकानंद विद्या निकेतन एक शैक्षणिक संस्था के नाते आदर्श शिक्षा मूल्यों को स्थापित करते हुए आगे बढ़ रहा है, यहाँ के छात्र निश्चित रूप से अपनी पसंद के क्षेत्र में आगे की पढ़ाई करने के साथ-साथ देश की संस्कृति और गरिमा के संवाहक बनेगे।

हम सब जानते है कि आज विश्व सतत विकास लक्ष्य की ओर बढ रहा है। वर्ष 2030 तक 17 विकास के लक्ष्यों को हासिल करना है, जिसके सत्रह लक्ष्यों में चौथा लक्ष्य सबको शिक्षा के समान अवसर देकर शिक्षित करने का है। सरकार तो निश्चित रूप से काम कर ही रही है परंतु इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। और मुझे आशा है कि ऐसे सामूहिक प्रयासों से भारत निश्चय ही अपने लक्ष्य को हासिल करेगा। हमें स्वामी विवेकानन्द जी का ये वाक्य 'उठो, जागो और तब तक न रुको, जब तक अपना लक्ष्य न हासिल कर लो ' याद रख कर दृढ़ निश्चय से आगे बढना है।

आज तकनीक का युग है। आज क्लास रूम शिक्षा के तौर तरीके बदल रहे है। आज इन्टरनेट से विद्यार्थी बहुत कुछ सीख रहे है, पर भारत में गुरु-शिष्य परम्परा का अपना आदर्श है और गुरु के संपर्क से शिष्य बहुत कुछ सीखते है जो किताबों, कंप्यूटर से संभव नहीं। विद्यालय इस परम्परा को जीवंत रखने का भी माध्यम है।

हमारे देश में हमेशा से बेटा-बेटी को शिक्षा के समान अवसर मिले इस का प्रयास हुआ है। आज बेटियों को हर क्षेत्र में उच्च पदों पर देखकर मन प्रसन्न होता है। यहाँ मैं एक बात और कहना चाहूंगा कि स्कूल में गुरु-शिष्य प्रबंधको सबका ये दायित्व भी बनता है कि वो सामाजिक ताने-बाने के पहरेदार बने, वे शिक्षा के माध्यम से ये जागरूकता भी लाये जिससे समाज में सौहार्द हो। युवा गलत आदतों में न पड़े और अपने प्रति, परिवार के प्रति, समाज और देश के प्रति जिम्मेदार बने। यही एक विकसित राष्ट्र की राह भी है और निशानी भी।

मित्रो, बच्चों के समग्र विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका को ध्यान में रखते हुए, मैं इस स्कूल के शिक्षकों और कर्मचारियों से आग्रह करता हूँ कि आप पूरी निष्ठा और प्रेरणादायी नेतृत्व कौशल से छात्रों को सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान करते रहें।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि विद्या भारती शिक्षा संस्थान कोटा जिले में स्वामी विवेकानंद विद्या निकेतन जैसे 22 स्कूल संचालित कर रहा है।

मुझे गर्व है कि स्वामी विवेकानंद विद्या निकेतन 1985 में अपनी स्थापना के समय से ही कोटा जिले के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने का उत्कृष्ट कार्य कर रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले छात्रों को छात्रावास की सुविधाएं प्रदान कर आप उन्हें एक समावेशी माहौल उपलब्ध करा रहे हैं। इसके साथ ही, मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि आप उत्तर-पूर्व भारत से आने वाले छात्रों को नि:शुल्क आवास और शिक्षा उपलब्ध करा रहे हैं ।

मैं एक बार फिर इस स्कूल को ऐसा शानदार और आधुनिक सभागार देने के गोयल ग्रुप के इस नेक कार्य की हार्दिक प्रशंसा करता हूँ, क्योंकि यह सुविधा किसी भी शिक्षण संस्थान के लिए निस्संदेह बहुत जरूरी है।

आपके ऐसे धर्मार्थ कार्य से व्यापक सामाजिक मुद्दों और कल्याणकारी कार्यों के प्रति आपकी रुचि और आपके समर्पण भाव का पता चलता है। मुझे विश्वास है कि समाज के विभिन्न वर्गों के समन्वित प्रयासों से देश में शिक्षा के कार्य को आगे बढ़ाने में प्रभावी सहायता मिलेगी।

मैं विद्या भारती शिक्षा संस्थान के भावी प्रयासों की सफलता की कामना करता हूं।